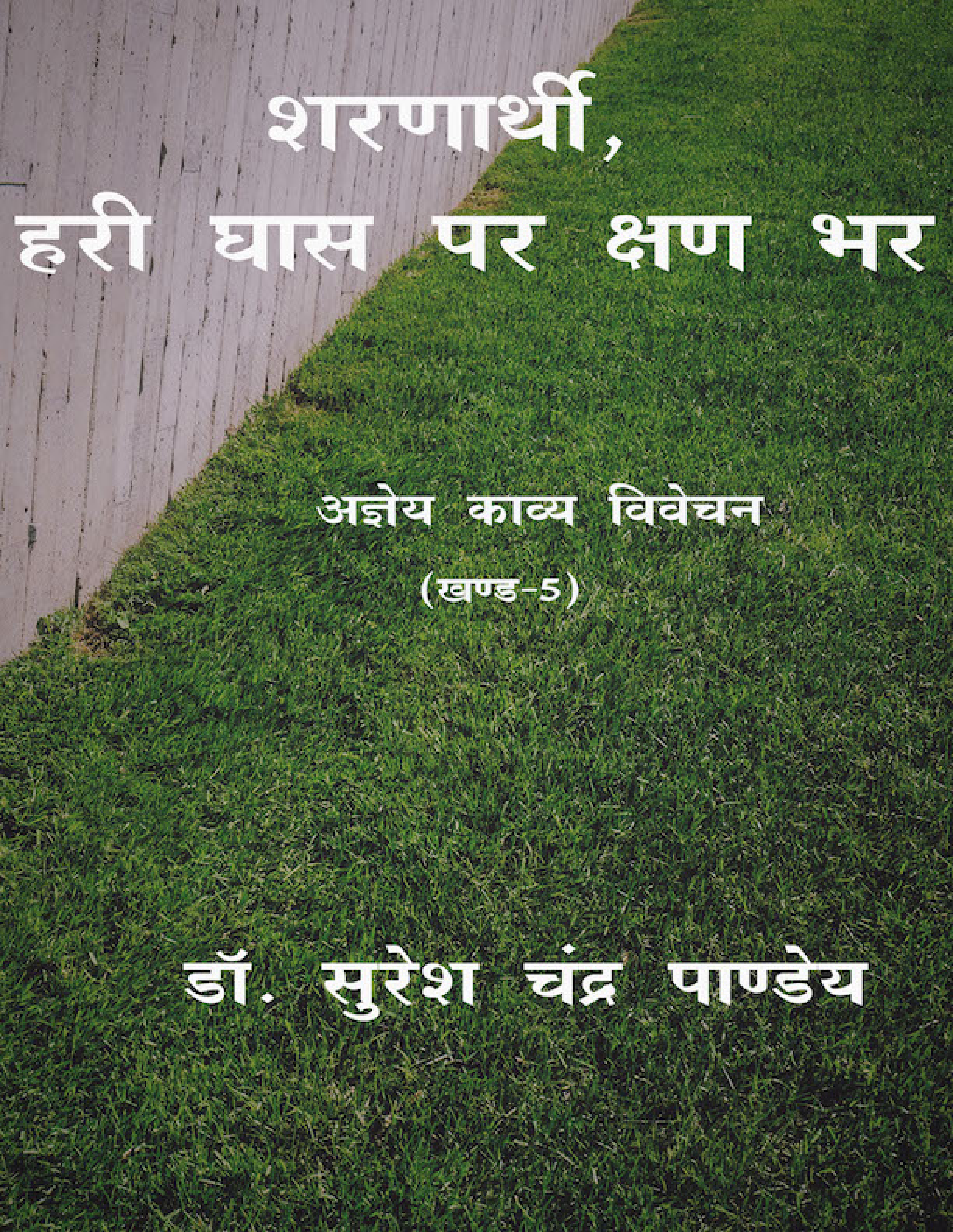

शरणार्थी,
हरी घास पर क्षण भर

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-5)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

‘शरणार्थी’, ‘हरी घास पर क्षण भर’

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-5)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

‘शरणार्थी’ 3

पृष्ठभूमि; वस्तु-भाव विवेचन; जाति-द्वेष और सांप्रदायिक उन्माद; हिंसा का चरम रूप; नैतिकता, आचार तथा धर्म का खोखलापन, नारी जाति का घोरतम अपमान; स्वाधीनता: एक ढोंग; कवि का निष्कर्ष; अभिव्यक्ति-विधान-संरचना; शरणार्थी श्रृंखला की कविताओं में प्रतीकों के उपादान पशु, रोग; तथा पशुओं और रोग से जुड़ी शब्दावली; पशु तथा पशुओं के अंग; स्वभाव-सूचक शब्द; क्षय और विनाश सूचक बिम्ब; तद्भव शब्द

‘हरी घास पर क्षण भर’ 15

शीर्षक: प्रस्तावना; वास्तु-भाव: विवेचन; संग्रह की कविताओं के विषय; प्रेम; विराट सत्ता का बोध; प्रकृति; जीवन के प्रति निष्ठा, कविता-कवि-कर्म; यथार्थ का नया धरातल; राष्ट्र

मूल्यांकन अभिव्यक्ति –विधान: 60

तद्भव/लोक बोली के शब्द; बिम्ब-विधान; प्रकृति से चुने गए बिम्ब; ऐन्द्रिय संवेदन संस्पर्शी बिम्ब; यथार्थ परक(नगर बोध से सम्बंधित) बिम्ब लय युक्त गति; सूक्ष्म ध्वनि-बोध; वृक्ष वनस्पतियाँ; संस्कृति-बोधक अभिव्यक्तियात्र; (आरंभिक रचनाओं से लेकर ‘हरी घास पर क्षण भर’ तक)

शरणार्थी

अज्ञेय की कविताओं-कहानियों का एक मिला-जुला संग्रह- 'शरणार्थी' सन् 1948 में प्रकाशित हुआ था। अज्ञेय की रचनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने वाली सभी पुस्तकों में 'शरणार्थी' को अज्ञेय के कहानी-संग्रहों के खाते में डाल दिया गया है। शायद यही कारण हो सकता है- 'शरणार्थी' श्रृँखला की कविताओं की चर्चा प्राय: नहीं के बराबर हुई है। वस्तुत: 'शरणार्थी' श्रृँखला की कविताएँ ‘इत्यलम्'- 1946 और 'हरी घास पर क्षण भर' - 1949, के बीच की रचनाएँ हैं और सदानीरा भाग- 1 में संकलित हैं।

पृष्ठभूमि :

14/15 अगस्त, 1947 मध्य रात्रि-भारत की स्वतंत्रता; साथ ही भारत का विभाजन-हिन्दुस्तान और पाकिस्तान-दो राष्ट्रों का उदय। दोनों देशों को आबादी के स्थानांतरण की छूट; जाति-द्वेष और साम्प्रदायिक हिंसा, धार्मिक उन्माद का नग्न ताण्डव; वतन छोड़कर, वतन की खोज-वतन की राह पर असंख्य बच्चों, बूढ़ों स्त्रियों, पुरुषों का रेला-न जाने कितने भूख, प्यास, रोग से रास्ते में मर गए, कितने मार डाले गये और जो बच रहे वे अपने साथ लाए/ ले गए साम्प्रदायिक उन्माद की सौगात। इस हृदय-विदारक त्रासदी पर मनुष्यता का माथा शर्म से झुक गया। इसी हृदय-विदारक त्रासदी की काव्यात्मक परिणति है 'शरणार्थी' श्रृँखला की ग्यारह कविताएँ जो 12 अक्टूबर से 12 नवम्बर 1947 के बीच लिखी गयीं और सन् 1948 में प्रकाशित हुईं।

वस्तु-भाव विवेचन :

इस मानव त्रासदी के मूल में सक्रिय घृण्य भावनाओं एवं विचार धाराओं ने कवि अज्ञेय के संवेदनशील मानस को किस तरह झकझोरा, उसका पड़ताल कर रही हैं ये कविताएँ !

1. जाति-द्वेष और साम्प्रदायिक उन्माद :